श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति
(अंतर्गत श्री अ.भा.सा. जैन संघ, बीकानेर)

प्रबोधिनी

त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष – 2 अंक–8 1 अक्टूबर, 2019 आसोज सुदी 2076

महावीर वाणी

भव कोडिय संचियं कम्मं,
तवसा णिज्जरिज्जइ।
करोड़ों भवों के संचित कर्म तपश्चर्या
के द्वारा निर्जीर्ण नष्ट हो जाते है।

सुधा सार

तपस्या की प्रक्रिया से अशुद्धि का वह पर्दा जलने लगता है, जो विकारों, वासनाओं और कर्मों के रूप में आत्मा के विवेक पर छाया हुआ है। यही पर्दा है जो अशुद्ध ईश्वर एवं शुद्ध ईश्वर के बीच व्यवधान के रूप में पड़ा हुआ है।

–परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

जैसे–ऑफिस में सप्ताह में एक दिन अवकाश रखा जाता है, वैसे ही सात दिनों में एक लंघन रखना चाहिये। पर व्यक्ति आज इस पेट की ऑफिस को अवकाश ही नहीं देता। फिर गड़बड़ी क्यों नहीं होगी? इस मशीनरी की सुरक्षा में तप रूपी तेल उपयोगी है। पर हमारे सामने ज्योंही हमारी प्रिय वस्तु आई, पेट नहीं चाहता पर मन रसना के वशीभूत हो जाता है।

–परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

सम्पादक पाती....

नाना के ओ राम! तुमको लाखों प्रणाम!!
सुमिरण करते तुमको, हम आठों ही याम।।
संयम में हो कठोर, पर कर डाला हमें विभोर।
किया हमारा उद्धार, कैसे चुका पायेंगे हम उपकार।।

जैन दर्शन के इस अनूठे क्षमा पर्व, अलौकिक मैत्री पर्व पर मैं हमारे संघ नायक परम पूज्य श्री रामलाल जी म.सा. बहुश्रुत वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर पूज्य श्री राजेश मुनि जी म.सा. तथा समस्त चारित्रशील आत्माओं से हृदय की अतल गहराइयों से क्षमा याचना करती हूँ। यदि भूल वश कोई भूल हो गई हो तो नादान समझकर भूल जाइयेगा और क्षमा कीजियेगा। इसी प्रकार समस्त महिला समिति से भी मन: पूर्वक क्षमा–याचना।

'महक उठेगी दुनिया सारी, यदि क्षमा के फूल खिला लो।
वैर-विरोध मन के मिटाकर, भीतर स्नेह का दीप जला लो।।'

जीवन को दिव्य गुणों से मंडित करने के लिये तेज और ओज को प्राप्त करने के लिये भारतीय संस्कृति में तप का विशेष महत्त्व है। तपस्या से रहित जीवन, मिट्टी का ज्योतिहीन दीपक है, सौरभ रहित फूल है और जल रहित नदी सदृश है, जिसके पास आकार तो है किंतु तेज, सुगंध और प्रवाह नहीं है।

तप मर्त्यलोक का कल्प वृक्ष है। यह जब निष्काम भाव से जीवन में उतरता है, उसके पीछे किसी प्रकार के प्रदर्शन, यश, प्रसिद्धि या कीर्ति की इच्छा नहीं रहती, तब अनेक प्रकार के सुखों की उपलब्धि होती है। तप मानवीय मूल्यों का प्रतिष्ठा से भरा उपक्रम है। तप जीवन की ऐसी दिव्यता है जो मनुष्य को ऊँचाइयाँ प्रदान करती है। जैन दर्शन में तो तप को, विशिष्ट स्थान प्राप्त है। जैन संस्कृति को यदि हम तप प्रधान संस्कृति कहें तो अधिक उपयुक्त होगा। तीर्थंकर जो कि सबसे अधिक दिव्य शक्ति संपन्न पुरुष माने जाते हैं, वे भी शुभ कार्य की आदि में, दीक्षा, कैवल्य आदि के प्रारंभ में तप करते हैं। भगवान महावीर का कथन है– तप साधना शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वस्थता के लिये नितांत अनिवार्य है।

साधुमार्गी साधु समाज हो या श्रावक समाज इनकी सुदीर्घ तप साधना से हम सभी चमत्कृत हैं। वर्तमान में बहुश्रुत वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर पूज्य श्री राजेश मुनि जी म.सा. बेले–बेले तप की कठोर आराधना में अप्रमत्त हैं। पूज्य अशोक मुनि जी म.सा. अत्यंत सहज भाव के साथ अपने 89 वें मासखमण की ओर अग्रसर हैं। पूज्य राकेश मुनि जी म.सा. ने भी लगातार 335 आयंबिल तप करके एक कीर्तिमान स्थापित किया है। अनेक संत–सतिवर्याओं के एकांतर, एकासन, आयंबिल आदि निरंतर गतिमान है। पूर्व में भी अनेक तपस्याएँ हुई हैं। इसी प्रकार श्रावक–श्राविका वर्ग में भी जो 151 दिवस का हिमालयी तप नोखा की बहन हेमलताजी बांठिया ने किया है, वह तो वर्ल्ड रिकॉर्ड बन गया है। युवा चेता, वीर भ्राता पुलकित जी गुलगुलिया ने 72 की तपस्या की। इस प्रकार अनेक बड़ी तपस्याएँ 61, 51 की भी हुई। मासखमण तो भरपूर हुए।

कहने का अभिप्राय यही है कि हुक्मगच्छ का ये साधुमार्गी संघ अपने संघ नायक की नेश्राय में तप की जगमग ज्योति से जाज्वल्यमान हो उठा है।

जो तपस्वी तपस्या करते हैं, वे तो महान हैं ही पर जो तप साधना करने वालों का अनुमोदन करते हैं, उनकी भी कर्म निर्जरा होती है–

तप ही आत्मा का असली चंदन है।
तप करने वालों को देवताओं का भी वंदन है।
क्या गुणगान करूं इन तपस्वी आत्माओं का
तप की राह पर चलने वाले,
तपस्वियों का हार्दिक अभिनंदन है।।
अनुमोदना! अनुमोदना!! बारंबार अनुमोदना!!!
सभी तपस्वी सुख साता में रहें।
करड़ो काम तपस्या रो, विरलां ही कर पावै।
नाम सुण्यां ही जीवड़ो कांपै, धड़कन भी बढ़ ज्यावै।।
प्रबोधिनी हमारी अपनी महिलाओं की, महिला समिति की पत्रिका है।
प्रबोधिनी प्रबुद्धता, प्रतिबद्धता, प्रगल्भता का पर्याय बने,
इसी प्रयास में..............

-वीना नाहर

आणाए मामगं धम्मं- (श्री राम उवाच-1)

राजा प्रसेनजित ने राजगद्दी देने हेतु योग्यताओं की परख करने की भावना से राजकुमारों की परीक्षाएं ली। एक परीक्षा यह भी ली गई-सारे राजकुमारों को पंक्तिबद्ध बिठाकर शाही भोजन परोसा गया। भोजन प्रारंभ होते ही खूंखार शिकारी कुत्ते छोड़ दिए गये। कुत्ते भोजन पर टूट पड़े, अब वह भोजन कौन खा सकता था? सामान्य मनुष्य के लिए भी दुष्कर। यह बात अलग है कि पेट की चपेट कुछ मजबूर कर दे। एक बार कहीं पढ़ा था-एक वृद्धा घोड़े की लीद में से अकणों को चुनकर उनसे अपने छोटे बच्चों के लिए रोटी बनाती है। आप सोचते होंगे-वह अपने कर्मों का फल भोग रही है। पर आपके भीतर, आपके हृदय में भी करुणा नाम की कोई चीज है या नहीं? मान लीजिए, कोई करोड़पति सेठ दुर्घटनाग्रस्त हो गया। कर्मों का उदय आ गया, तो उसे अस्पताल में ले जाया जायेगा या नहीं? एक व्यक्ति भयंकर दर्द से पीड़ित है। यदि उसे उस समय कोई दर्द दूर करने की गोली दी जाय तो उसे आराम मिलेगा या नहीं? इसी प्रकार व्यक्ति के कर्मों का उदय तो है पर यदि आपका सहयोग मिल जाय तो उस व्यक्ति के उदय भाव से रसों में कमी हो सकती है। राजकुमार भोजन छोड़कर खड़े हो गए, पर एक राजकुमार श्रेणिक ने विचार किया कि मेरे पास इतना सारा भोजन है। एक पूरी उठाई और कुत्ते की दिशा में करके दूर फेंक दी, कुत्ता उस पूरी पर झपटा तब श्रेणिक ने दो-चार ग्रास गले उतार लिये और पुन:-पुन: कुत्ते को कुछ देकर दूर भगा कर भरपेट भोजन कर लिया। यह था भावना और विवेक का परिचय। भोजन के साथ हमारे भावों का महत्त्व ही महत्त्पूर्ण होता है। आहार हो शरीर को टिकाने के लिए, स्वाद-लोलुपता से तो इन्द्रिय पोषण सक्रिय होगा और फिर 'अशुभय: पापस्य' अशुभ भावों से पापकर्मों का आश्रव होगा। पर हमें तो समाधि के प्रयोजन से आहार करना है। श्रेणिक के द्वारा कुत्तों की ओर आहार फेंकना 'स्वतृप्ति' की दृष्टि से था। इसी तरह हम भी इस काया रूप कुत्ते को टुकड़े देवें। हमें इसका निर्वाह करना है। काया रूपी कार को चलाना है ताकि यात्रा निर्बाध तय हो सकें। टंकी में पर्याप्त पेट्रोल की जरूरत तो होगी ही पर टंकी में पेट्रोल कितना डाला जाय? यदि टंकी में 5 लीटर ही समाता है तो अधिक भरना संभव नहीं। जरूरत हो तो अलग डिब्बे में उसकी व्यवस्था करनी होगी। इसी तरह मोक्ष रूपी गंतव्य तक पहुँचाने में यह औदारिक शरीर रूपी कार साधनभूत है और इसके निर्वाह के लिए आहार रूपी पेट्रोल यथोचित मात्रा में आवश्यक है। अति आहार असमाधि को उत्पन्न करेगा। ब्रह्मचारी के लिये तो आहार के संबंध में स्पष्ट निर्देश उत्तराध्ययन में दिये गये हैं। वहाँ उल्लेख है कि साधु स्वाद के लिये नहीं किन्तु जीवन यात्रा के निर्वाह के लिये भोजन करे-'न रस्सट्ठाए भुंजिज्जा, जवणट्ठाए महामुणी' (35।17)। ब्रह्मचारी को तो इस दृष्टि से अत्यंत सचेत रहना चाहिये-

रसा पगामं न निसेवियव्वा, पायं रसा दित्तिकरा नराणं।
दित्तं च कामा समभिद्दवंति, दुमं जहा साउपफलं व पक्खी।

अर्थात् ब्रह्मचारी को घी-दूध आदि रसों का अधिक सेवन नहीं करना चाहिये क्योंकि रस प्राय: उद्दीपक होते हैं। उद्दीप्त पुरुष के निकट कामभावनाएँ वैसे ही चली आती हैं जैसे स्वादिष्ट फल वाले वृक्षों के पास पक्षी चले आते हैं।

आहार के साथ समाधि के लिये सहाय और निकेत की भी जरूरत होती है। यह सब समझकर ही हम अपने जीवन को समाधि की ओर अग्रसर करें।

प्रेरक कथा- मिताहार-

राजा प्रसेनजित को खाने का संयम नहीं था। वह मर्यादा से अधिक भोजन करता था। इससे उसका पेट फूल जाता, सांस भारी हो जाती, हर कार्य में आलस्य का अनुभव होता।

एक दिन वह भोजन कर महात्मा बुद्ध के पास जेतवन विहार में गया। नमस्कार कर थोड़ी दूर पर बैठ गया। अधिक खाने से उसके शरीर में आलस्य छा रहा था। बिना सहारे बैठना भी कठिन हो गया।

'मनुजस्स सदा सतीमता। मत्तं जानतो लद्ध भोजने।
तनु तस्स भवंति वेदना। सणिकं जीरति आयु पालयं।।'

-जो स्मृतिवान् मनुष्य अपने भोजन का प्रमाण जानता है, उसके बीमारी कम होती है। वह शांति से आयुष्य को भोगता हुआ लंबे समय के बाद बूढ़ा होता है।

राजा के साथ सुदर्शन नाम का एक युवक था। उसने उपरोक्त गाथा याद कर ली। भोजन के समय वह रोजाना सुनाता। इससे राजा के स्वभाव में परिवर्तन हो गया। शारीरिक और मानसिक दोनों ही दृष्टियों से बहुत लाभ हुआ।

य: स्वल्पं भुंक्ते, स बहु, भुंक्ते - जो कम खाता है, वह अधिक खाता है। इस वाक्य के पीछे लंबे आयुष्य की ध्वनि छिपी हुई है।

जब यह प्रश्न हुआ कि 'को रुक, को रुक्' - नीरोग कौन है?

उत्तर मिला- 'हित भुक्, मितभुक्' - जो परिणाम सहित पथ्य भोजन करता है, वह नीरोग है।

स्वस्थता के लिये खाद्य-संयम आवश्यक है।

'लोच में क्या सोच'

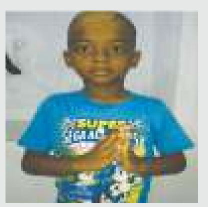

'जोधपुर में लगभग 200 गुरुभक्तों के केशलोच सुसंपन्न'।

जय गुरु नाना।। श्री महावीराय नमः।। जय गुरु राम।।

केसरिया कार्यशाला

श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति द्वारा सभी क्षेत्रों के लिए

अनन्य महोत्सव-2020

केसरिया कार्यशाला के केसरी रंग

केसरिया कार्यशाला अ.भा.साधुमार्गी जैन महिला समिति का एक ऐसा अद्भुत, अनूठा, अभूतपूर्व प्रकल्प है, जिसने महिला समिति में प्राण फूंक दिये हैं और सभी स्थानीय महिला मंडलों को सक्रियता प्रदान कर उन्हें एक सूत्र में पिरोने का महनीय कार्य संपादित किया है। सभी में एक नवीन उत्साह, उमंग का संचार-सा हो गया है। 'टैग लाइन' भी अत्यंत आकर्षक है जो सभी को अपनी ओर आकर्षित करती है-

एक अलौकिक संघ! एक अनोखा गणवेश! एक अनूठा कार्य! हर मंडल में! हर जगह प्रत्येक महीने के कार्य द्वारा एकरूपता की अद्वितीय मिसाल!!

श्रीमद्‌भगवती सूत्र के 21-24 शतकों के 10 उद्देशों में वृक्ष का वर्णन चलता है। श्री अखिल भारतवर्षीय जैन महिला समिति का अखिल भारतीय स्तर पर जैसे वेशभूषा में एकरूपता है। वैसे ही कार्य में एकरूपता लाने के लिए मूल से बीज तक के दस भागों को लेकर दस प्रकार के कार्य श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति द्वारा दिये जायेगे। जो सभी महिला मंडल के अध्यक्ष-मंत्री द्वारा अपने-अपने मंडल में निर्धारित समय पर हर महीने निष्पादित किये जायेगे।

छठे महीने का कार्य

दिनांक-16 अक्टूबर 2019, समय-दोपहर 2-3 बजे

6. **प्रवाल-** छठे महीने हमारे वृक्ष का छठा भाग

शीर्षक- आरुग्गबोहिलाभं (आचार्य श्री नानेश 20 वीं पुण्यतिथि और आचार्य श्री रामेश 20 वां पदारोहण दिवस)

वैराग ने दी दस्तक संयम के आगे झुक गया मस्तक।

दीक्षा लेना अनिवार्य नही है, संस्कारों की नींव सुदृढ़ करना अनिवार्य है। बालक-बालिकाओं को लाभं में भेजना।

उपरोक्त छः महीने के कार्यों का विवरण आपके समक्ष प्रस्तुत है। आगे कार्यों के निष्पादन के लिये समय-समय पर सूचनाएं मिलती रहेंगी।

7. **पत्र -** पर्युपासना, सम्यक्त्व की सुदृढ़ आराधना।
8. **पुष्प -** परिवारांजलि का धारण, गुरु के प्रति सच्चा समर्पण।
9. **फल-** स्वयं का विकास, संघ-समाज में उल्लास।
10. **बीज-** वाग्मिता

केसरिया कार्यशाला

शुभारंभ सम्बन्धी नियमावली

1. नवकार मंत्र 2. संघ समर्पणा गीत 4 लाईन
3. प्रार्थना 4. साधुमार्गी केसरिया गणवेश
5. प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले को पुरस्कार वितरण स्थानीय स्तर पर अनिवार्य है।

प्रथम पुरस्कार- 200/- द्वितीय पुरस्कार- 150/-
तृतीय पुरस्कार- 100/-

6. सामायिक अनिवार्य

निवेदक-

श्रीमती प्रभा जी देशलहरा	श्रीमती सुरेखा जी सांड	श्रीमती सुमन जी सुराणा
राष्ट्रीय अध्यक्षा	राष्ट्रीय महामंत्री	राष्ट्रीय कोषाध्यक्षा

सम्पर्क सूत्र: नीरू बैद (9406328500), पुष्पा मेहता (9413716540)

केसरिया कार्यशाला

Brochure Making Competition Result

अखिल भारतीय स्तर पर

परिणाम	कोड नं.	नाम	स्थान
प्रथम	203	अनू जैन	ब्यावर
द्वितीय	735	पायल सिंगी	सूरत
तृतीय	4	अंगूरबाला भडक्त्या	चितौडगढ
तृतीय	1036	सोनम देवी भूरा	सिलचर

आंचिलिक स्तर पर

मेवाड अंचल

प्रथम	12	ज्योति भूरा	भीलवाड़ा
द्वितीय	14	कल्पना पटवारी	चितौड़गढ
तृतीय	31	सुनीता जैन	निम्बाहेड़ा

बीकानेर-मारवाड़ अंचल

प्रथम	106.	लीला जैन	जोधपुर
द्वितीय	113	श्वेता जैन	जोधपुर
तृतीय	117	रूचि जैन	जोधपुर

जयपुर ब्यावर अंचल

प्रथम	211	सोनू चौधरी	ब्यावर
द्वितीय	202	अंजू हिंगड	ब्यावर
तृतीय	214	आशा जैन	सवाई माधोपुर

मध्यप्रदेश अंचल

प्रथम	329	मेघा पोरवाल	मंदसौर
द्वितीय	359	संगीता कोठारी	रतलाम
तृतीय	321	ममता पिरोदिया	रतलाम

छत्तीसगढ़ अंचल

प्रथम	414	प्रियंका देसरला	दुर्ग
प्रथम	437	श्वेता धारीवाल	रायपुर
द्वितीय	409	ममता बाफना	बालोद
तृतीय	403	डिम्पल जैन	गुण्डरदेही

तमिलनाडु अंचल

प्रथम	501	मोनिका चंडालिया	चैन्नई
द्वितीय	502	जुली चौधरी	चैन्नई
तृतीय	509	सुलेखा मेहता	चैन्नई

कर्नाटक अंचल

प्रथम	605	रेखा कटारिया	श्रीरामपुरम्
द्वितीय	610	किरण मुणोत	मलेश्वरम्
तृतीय	602	गीता दक	बैंगलोर

मुम्बई-गुजरात अंचल

प्रथम	712	मनीला भूरा	सूरत
द्वितीय	702	अंशु सुरभि रांका	साबरमती
तृतीय	720	प्रियंका सुराणा	सूरत

महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश अंचल

प्रथम	809	मोनिका सुरेन्द्र जैन	धुले
द्वितीय	803	छाया दिपीका जैन	धुले
तृतीय	804	दर्शना रविन्द्र खींवसरा	धुले

बंगाल-बिहार-नेपाल भूटान अंचल

प्रथम	905	पुष्पा बरडिया	हिन्दमोटर
द्वितीय	915	विजय लक्ष्मी डागा	कोलकाता
तृतीय	916	विनिता सेठिया	कोलकाता

पूर्वोत्तर अंचल

प्रथम	1031	विनीता सुराणा	गुवाहाटी
द्वितीय	1024	सरिता बाफना	गुवाहाटी
तृतीय	1006	गीता देवी मालू	सिलापथार

दिल्ली-पंजाब-हरियाणा अंचल

प्रथम	1103	शर्मिला हीरावत	दिल्ली
द्वितीय	1101	ज्योति	नई दिल्ली
तृतीय	1102	रचना गोलछा	दिल्ली

केसरिया कार्यशाला-

बड़े ही हर्ष का विषय है कि केसरिया कार्यशाला में अ.भा.सा.स्तर पर लगभग 52 क्षेत्रों ने अपनी सहभागिता बड़े ही उत्साह पूर्वक रीति से निभाई।

केसरिया कार्यशाला आयोजित क्षेत्र

स्थान

* उदयपुर
* मुंगेली
* धुलिया
* जोधपुर
* जयपुर
* बम्बोरा
* रायपुर

स्थान

* चेन्नई
* दिनहाटा
* काठमांडू
* मैसूर
* कोलकात्ता
* बरहमपुर
* गंगाशहर-भीनासर

* जनकपुरधाम
* कोरबा
* कंजार्डा
* जलगाँव
* गुन्डरदेही
* नोखा
* बिलासीपाडा
* औरंगाबाद
* सूरत

* अजमेर
* टोंक
* हंसुर
* रतलाम
* गुवाहाटी
* मुंगेली
* कानोड़
* ब्यावर
* हावड़ा

* डोंगरगांव
* बैंगलोर
* बीकानेर
* बालोद
* हिन्दमोटर
* सोनारपेठ
* चित्तौड़गढ़
* भीलवाडा
* सिल्चर
* भोपालसागर

* मुंबई
* बड़ीसादड़ी
* उज्जैन
* अहमदाबाद
* दिल्ली
* सिलापथार
* धुले
* मंदसौर
* राजनांदगांव
* इंदौर

केसरिया कार्यशाला के कतिपय दृश्य-

चातुर्मासिक आयोजन

समता भवन पर केशरिया कार्यशाला

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क

स्पर्धा में शामिल महिला मंडल।

तप का तेज-

घोर तपस्वीराज पूज्य श्री अशोक मुनि जी म.सा. 89 वां मासखमण की ओर अग्रसर-

प्रतापगढ़- युग निर्माता आचार्य श्री रामेश के आज्ञानुवर्ती शासन दीपक तपस्वीराज अशोक मुनि जी म.सा. ने अपूर्व आत्म शक्ति का परिचय देते हुए 88 वां मासखमण पूर्ण कर जिन शासन की गौरव गरिमा में चार चाँद लगाये है। तपस्या में भी प्रवचन एवं अपनी समस्त आध्यात्मिक साधना में वे तत्पर रहते हैं। इस महान तपस्या पर साधुमार्गी जैन संघ, प्रतापगढ़ व अनेक श्रद्धालुओं ने तप की अनुमोदना की। अब ये तपस्वी आत्मा 89 वें मासखमण की ओर अग्रसर है।

संत रत्न श्री राकेश मुनि जी म.सा. ने किये लगातार 335 आयंबिल-

बीकानेर- युग पुरुष आचार्य श्री रामलालजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती श्री राकेश मुनि जी म.सा. ने लगातार 335 आयंबिल करके अपूर्व आत्म-शक्ति का परिचय दिया है। ज्ञान-ध्यान, तप-त्याग में स्वयं लीन रहते हुए अन्य श्रावक-श्राविकाओं को भी निरंतर ज्ञानार्जन करवा रहे है। सभी ने उनके इस उग्र तप की सराहना करते हुए सुख शांति की पृच्छा की है।

धर्म-कर्म

मुमुक्षु रांका के जीवन चरित्र पर नाटिका का किया मंचन

तप की महिमा

तप की महिमा न्यारी, तप की गरिमा न्यारी
ओ तपसन बहना हम सब जाये बार-बार बलिहारी
बोलो तपस्वी की जयकारी-जयकारी
अन्न त्याग कर मन वश राखी, अपनी आत्मा तारी
सुन्दर काया तप करके तपस्वी ने निखारी
बोलो तपस्वी की जयकारी-जयकारी
तप है निर्जरा की क्यारी, खिल रही तप की फुलवारी
देखो बगिया महक रही है तप से प्यारी-प्यारी
बोलो तपस्वी की जयकारी-जयकारी
रामगुरू के आशीर्वाद से, मासखमण की तपस्या
करके कर्मो की भारी उतारी और नैय्या अपनी तारी
बोलो तपस्वी की जयकारी-जयकारी
आई है अब महिला मण्डल श्री संघ की बारी
हम सब पूछे सुख और साता स्वागत आरती उतारी
छोटे-छोटे नियम ले करे अनुमोदना थारी
बोलो तपस्वी की जयकारी-जयकारी

रचयिता-पवन चन्दनबाला सियाल, रतलाम

जिन शासन विराट- लगाये शिविर के ठाट-

जिन शासन विराट- लगाये शिविर के ठाट-

ना कोई कारण, ना कोई बहाना
चाहो जिन शासन को चमकाना।
धर्म को दिल में रमाना
तो शिविर में आना ही आना।।

आचार्य श्री रामेश की आज्ञानुवर्तिनी शासन दीपिका श्री समता श्री जी म.सा. के सान्निध्य में अनुपम शिविर के ठाठ-हुक्म संघ है विराट। महासती श्री प्रसिद्धि श्री जी द्वारा लिया जाने वाला शिविर ''माह है जून शिविर का है जुनून।।

शि. शिक्षा, वि. विनय-विवेक से जीवन में, र- रमण करना।

1. निम्बाहेड़ा- बालक संस्कार शिविर का आयोजन किया गया जो भव्य एवं आलौकिक हुआ। जिसमें 166 बच्चों ने बडे ही उत्साह से भाग लिया। श्री संघ ने पारितोषिक देकर बच्चों का उत्साह बढ़ाया।
2. भादसोड़ा में बालक संस्कार शिविर हुआ उसमें 50 से अधिक बालक-बालिकाओं ने भाग लिया। इस शिविर जीवन को सुंस्कारित करने की प्रेरणा दी एवं श्री प्रसिद्धि श्री जी म.सा. के संसार पक्षीय जियाजी श्री महेन्द्र कुमार जी सा. चौरड़िया ने बच्चों को पारितोषिक देकर उत्साह वर्द्धन किया।
3. मंगलवाड- में महिलाओं का शिविर हुआ उसमें 60 से अधिक महिलाओं ने भाग लिया। ''लाइफ- डिजाइनिंग'' शिविर का आयोजन किया गया। अपनी लाइफ कैसी हो, अपने उसको कैसी बनाये आदि जानकारी देकर- ''शिविर में आना है जीवन सजाना है।

   गुरु राम के चरणों मे कुछ करके दिखाना है।''

   इस स्तवन ने महिला में जोश और उमंग के भाव जगाये। श्री संघ ने महिलाओं को अल्पाहार कराकर अनंत-अनंत पुण्यवानी का बंध किया।
4. डुंगला में साधुमार्गी परिवार मात्र एक ही है फिर भी शिविर में लगभग 40 से अधिक महिलाओं की उपस्थिति रही। ''जीवन जीने की कला'' इस शिविर का मुख्य पॉइंट था। गृहस्थ जीवन में यतना और विवेक की जानकारी दी गई।
5. बोहेडा- में श्री मान जगदीश चन्द्र जी सा. भण्डारी के आग्रह पर एक शिविर का आयोजन किया-''आर्ट ऑफ लिविंग'' के बारे में समझाया गया। शिविर में 40-45 बहिनों ने भाग लिया। भण्डारी जी ने पारितोषिक देकर शिविरार्थियों एवं संघ की प्रभावना की।

अल्का विशाल मारू, बडीसादड़ी

तप-

मंदिर की सीढ़ियों पर जड़े पत्थर ने मूर्ति में लगे पत्थर से कहा भाई तू भी पत्थर मैं भी पत्थर पर लोग तुम्हारी तो पूजा करते है और मुझे कोई नहीं पूछता है ऐसा भेदभाव क्यों?

मूर्ति ने उत्तर दिया ये सच है कि तू भी पत्थर और मैं भी पत्थर पर तू नहीं जानता कि मैंने अपने इस शरीर में कितनी छैनिया झेली है बहुत कष्ट झेलने के बाद में यहाँ पहुँची हूँ तुम वहीं के वहीं हो।

यह एक काल्पनिक कहानी है हमें बहुत कुछ सिखाती है। आत्मिक व शारीरिक अनुशासन के लिये उठाए जाने वाले दैहिक कष्ट को तप कहा जाने लगा। तप करने से आत्मा शुद्ध होती है इन्द्रिया नियंत्रित होती है मन वश में होकर आत्मा का कल्याण होता है।

तप का अर्थ है- पीड़ा सहना, घोर कड़ी साधना करना, मन को संयम में रखना।

तप के कई प्रकार हैं- सात्विक तप जो परम श्रद्धा से किया जाता है फल भोग की आकांक्षा नहीं होती। स्वाध्याय करना परम तप है, इच्छाओं का निरोध करना भी तप है भोगो को रोकना तप है।

गीता में तीन प्रकार के तप बताये है

शारीरिक वाचिक मानसिक।

सूर्य भी तपता है धरती भी तपती है तभी वनस्पतियों को भोजन व प्राणियों को जीवन मिलता है भागीरथ कड़ी तपस्या करके गंगा को धरती पर लाये अनेक ऋषि ने कड़ी से कड़ी तपस्या की है। शुद्ध भावों से बिना आकांक्षाओं से किया गया त्याग ही तप है।

ललिता बोथरा, पंचकुला

महिला मंडल सूरत द्वारा नवनिर्मित नानेश प्याऊ का लोकार्पण-

सूरत संघ के लिये बहुत ही गौरव एवं हर्ष का विषय है कि दिनांक 23.8.19 शुक्रवार को सूरत रेलवे स्टेशन पर स्थित प्लेटफार्म न. 4 पर समता महिला मंडल सूरत द्वारा नवनिर्मित नानेश प्याऊ का लोकार्पण अध्यक्ष श्रीमान अजित जी कांकरिया के शुभ हाथों से हुआ। नवकार मन्त्र के जाप के साथ इस कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। सूरत संघ ने अपने नाना गुरुदेव की जन्म शताब्दी मनाने के लिए आचार्य श्री रामेश के चरणों में श्रद्धाभिषिक्त अर्ध्य अर्पित किया है। श्रीमान अजित जी कांकरिया एवं श्रीमती उषा जी कांकरिया के अथक प्रयास से यह कार्य सिद्ध हो सका। चारों संघों के पदाधिकारी एवं सदस्य इस अनुपम कार्य के साक्षी बने। अनन्य महोत्सव में सूरत संघ इसी तरह अपना योगदान देता रहेगा, इसी आशा एवं विश्वास के साथ।

ज्ञान आराधना महोत्सव चातुर्मास-2019

नाना गुरुवर के पट्टधर प्यारे, हुक्म संघ के प्राण हैं।
राम गुरुवर सबसे निराले, हम भक्तों की जान हैं।।

निर्लिप्त अध्यात्म योगी, वर्तमान के वर्द्धमान, जिन शासन की शान, हुक्म संघ के प्राण, सामाजिक उत्क्रांति के उद्घोषक, नानेश पट्टधर आराध्य देव आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा., बहुश्रुत वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-17 एवं शासन दीपिका मंजुला श्री जी म.सा. आदि ठाणा 34 का सूर्यनगरी जोधपुर में ज्ञान आराधना महोत्सव अपूर्व धर्म व तप आराधना पूर्वक प्रवर्द्धमान है। देश-विदेश से दर्शनार्थियों का आवागमन जारी है। अनेक विनतियाँ श्री चरणों में हो रही है।

आचार्य श्री रामेश ने अपनी प्रभावशाली अमृत देशना में फरमाया कि हम दुनिया के कार्यों की तो बहुत समीक्षा करते हैं, पर हमारी स्वयं की समीक्षा करें कि दुनिया हमारे बारे में क्या बोलती है। कबीर के सिद्धांत 'निदंक नियरै राखियें' का अनुसरण करना चाहिये। जिस अवलोकन के लिये गंभीरता के साथ चिंतन ज़रूरी है। समीक्षा के अभाव में बदलाव नहीं आ सकता।

आचार्य भगवन् की प्रेरणा से अब तक 25 मासखमण पूर्ण हो चुके हैं। पर्यूषण पर्व के दौरान 500 तेले, 60 से भी अधिक अठाई, 9,11 की तपस्याएँ एवं लगभग 2000 उपवास, आयंबिल, दया, संवर पौषध आदि हुए। 200 के लगभग लोच हो चुके हैं। 6,8,9 वर्ष के बालकों ने भी लोच करवाये हैं। आचार्य भगवन् के प्रवचन से प्रभावित

जोधपुर: संत आचार्य रामेश के सानिध्य में ऐतिहासिक समारोह

सांसारिक मोह छोड़ तीन युवतियों ने ली दीक्षा

पत्रिका न्यूज नेटवर्क

दीक्षार्थी अपने उद्देश्य को नहीं भूले : आचार्य रामेश

साध्वियों को मिले नए नाम

होकर 40 लोगों ने कसाई का धंधा करने वाले लोगों को जीव दया से जुड़कर इस हिंसक प्रवृत्ति से छुड़ाने का संकल्प लिया।

आचार्य भगवन् के पावन दर्शनार्थ संबोधि धाम के मूर्तिपूजक संप्रदाय के प्रख्यात संत श्री ललितप्रभजी म.सा., श्री चंद्रप्रभजी म.सा., श्री शांतिप्रियजी म.सा. का समता भवन पधारना हुआ। कुछ समय महापुरूषों के बीच गहन धर्म चर्चा हुई। इसी कड़ी में रत्न वंश के आचार्य श्री हीराचंद जी म.सा. के संत तत्त्व चिंतक श्री प्रमोद मुनि जी म.सा. आदि का भी समता भवन में पधारना हुआ। महापुरूषों से ज्ञान चर्चा के उपरांत संथारा धारी श्रद्धेय श्री गुलाब मुनि जी म.सा. को आगम वाणी श्रवण करवाई गई।

इस प्रकार तप त्याग, धर्म ध्यान के साथ ये ज्ञान आराधना महोत्सव भी अपनी एक पृथक् छटा बिखेर रहा है। कई शील व्रत के प्रत्याख्यान भी हुए।

ब्यावर में सोनू जी रांका का बहुमान करते हुए

कत्लखाने बंद हों-

मनुष्यों होश में आओ, पशुओं को भी अपनी स्वाभाविक मौत से मरने का हक दिलाओ।

पशु भी ईश्वर की सृष्टि है। पर क्या ये मूक प्राणी बेमौत मरने के लिये ही पैदा हुए हैं। बेचारे पशु मनुष्य की सेवा करते हैं। हम उनकी भाषा नहीं समझते, किन्तु वे भी रोते हैं। जब कसाई इन बेजुबान पशुओं को कत्लखानों में घसीटकर उनकी निर्दयतापूर्वक हत्या करता है तो हमारी मानवता क्यों सुषुप्त होती है??

इसी सुषुप्त मानवता को झिंझोड़कर जगाने का उपक्रम किया है हमारे अनुशास्ता करुणा के मसीहा परम पूज्य श्री रामलालजी म.सा. ने और कई श्रावक-श्राविकाएँ जुट गये हैं इस नेक कार्य में। देखिये छोटी-सी बानगी:-

मांसाहार का त्याग करवाने की प्रेरणा-

आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. की असीम कृपा व आशीर्वाद से इम्फाल में रहने वाली 25 वर्षीय मारिया जिसको मांसाहार को छोड़ने की प्रेरणा करने से उससे होने वाली हानियाँ (नुकसान) के बारे में समझाया जिससे प्रेरित होकर उसने आजीवन मांसाहार का त्याग किया है और रतलाम दिलीप नगर नानेश चिकित्सालय मे कार्यरत रजाक कुरेशी (मुस्लिम) इन्होंने भी महीने में 26 दिन मांसाहार का त्याग किया है और अतिशीघ्र ही आजीवन त्याग करने की भावना है। रतलाम में ही अध्ययनरत धर्मेन्द्र सिंह राठौड खेड़ा निवासी, जिला-जावरा, मो. 6264771867, जयसिंह रानीगांव (पिपलौदा), मो. 8120104446, देवेन्द्र सिंह, पुष्पेन्द्र सिंह-रानीगांव, लोकेन्द्र सिंह, तेजपाल सिंह मो. 9171096398, कुलदीप सिंह मो. 6267797527, इन सभी ने मांसाहार व व्यसनो का त्याग किया है इन सभी की उम्र 16 वर्ष से 21 वर्ष के लगभग है एक दो जने इफ्का फैक्ट्री में कार्यरत है आज 20.9.19 को पूणे में रजिया मुल्ला मुस्लिम बहिन ने आजीवन अण्डा मांस खाने का त्याग प्रत्याख्यान लिया है इन सभी ने गुरूदेव के व्यसन मुक्ति अभियान को साकार किया है यह सभी धन्यवाद के पात्र है।

स्वाध्यायी पवन जी व चंदनबाला जी सियाल के सतत प्रयास से इन सभी ने त्याग किया यह प्रयास निरन्तर जारी रहेगा।

कसाईयों को धन्धे से मुक्त करवाना-

आचार्य श्री नानेश जन्म शताब्दी वर्ष पर आचार्य श्री रामेश जी के पावन प्रेरणा से कसाई धंधा जीव हत्या का काम करने वाले देवली कला जिला पाली राजस्थान के भाई सिकंदर कुरेशी ने आजीवन कसाई धंधा छोड़ने का संकल्प लिया इसमें युवा समाजसेवी परम गुरु भक्त श्री पंकज जी शाह पिपलयाकला एवं आदरणीय मोहम्मद सलीम भाई पिपलयाकला का जबरदस्त सहयोग प्राप्त हुआ निकट भविष्य में पांच और लोगों को कसाई धंधा छुड़वाने का संकल्प सलीम भाई ने लिया साधुमार्गी जैन संघ जोधपुर द्वारा दोनों का सम्मान किया गया।

आप भी अपने गांव नगर में कसाई धंधा करने वालों को छुड़वाने का भागीरथी प्रयास करें।
महेश नाहटा

संयोजक-
कसाईयों का जीवन बदले अभियान
आचार्य श्री नानेश जन्म शताब्दी वर्ष
अनन्य महोत्सव
9406201351,7977370892

आपके प्रयासों की जानकारी हमें अवश्य देने की कृपा करें।

ओसवाल जैन समाज ने की धर्माराधना
अपूर्व धर्म ध्यान की लहर जगदलपुर

युग निर्माता शासन दीपिका श्री पावन श्री जी म.सा. आदि ठाणा-3 के चातुर्मास धर्म ध्यान तपत्याग से इस प्रकार चल रहा है-

- तेला 80, अठाई 8, 9-8, 11-2, मासखमण-2,
- शीलव्रत-2 (1. प्यारी बाई जी नाहटा श्री रावल मल जी नाहटा, 2. गुप्त)
- संवर- 7000, अष्टप्रहर पौषध- 105, पौषध-400, दया-100
- शिविर- 1. टेंशन फ्री
  2. अण्डर मे रहने से अण्डर स्टैंडिंग कैसे आती है?
  3. सबसे स्मार्ट कौन
  4. आओ ज्ञान ध्यान से कैसे जुड़े
  5. मुझे भी कुछ बनना, हमे भी कुछ पाना है
  50-थोकड़े-20 लोग
  प्रतिक्रमण- 20 लोग
  6. युवा प्रबोध क्लास- 25
- मासखमण- 2 (1. श्रीमती ममता बाफना, 2. कु. तनु श्री तातेड़ (19 वर्षीय बालिका)
- नये स्वाध्यायी बने-
  1. श्रीमती प्यारी बाई जी नाहटा
  2. श्रीमती आशा जी गोलछा
  3. श्रीमती लता जी सांखला
  4. श्रीमती सरोज जी पारख
- समता शाखा की उपस्थिति-215 (पर्युषण में)
- संवर के प्रत्याख्यान-
  1. श्रीमती ईश्वरी बाई जी श्रीश्रीमाल-1001
  2. श्रीमती भारती जी पारख-1001
  3. श्रीमती सरोज जी पारख-501
- 24 घंटे अखण्ड नवकार मंत्र का जाप
- प्रतिक्रमण की अठाई-500
- संवत्सरी प्रतिक्रमण की उपस्थिति-750

जगदलपुर श्री संघ के इतिहास में पहली बार जैन-जैनेत्तर सभी धर्म लाभ ले रहे है।

- गरबा नहीं देखने व नहीं खेलने का प्रत्याख्यान-400
- सचित्त त्याग हरी त्याग की अठाई-400
- आयंबिल का मासखमण- सरोज बाई जी पारख (दो बार)

प्रेषक-महेश नाहटा

शुभकामनाएं

श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन महिला समिति की नव निर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्षा

श्रीमती नंदा जी कर्नावट

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के नव-निर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्रीमान् गौतम जी रांका

प्रबोधिनी परिवार तथा महिला समिति की ओर से हार्दिक बधाई व शुभकामनाएँ

'संतरा नगरी नागपुर में धर्म ध्यान का अपूर्व ठाठ'

'आचार्य श्री रामलाल जी म.सा.' के आज्ञानुवर्ती 'प्रज्ञासम्पन्न शासन दीपक पूज्य श्री विनय मुनि जी म. सा. आदि ठाणा 3' के सान्निध्य में 'धर्म नगरी नागपुर' का चातुर्मास धर्म ध्यान तप त्याग युक्त सानंद चल रहा है।

पूज्य गुरु भगवंतों के अथक पुरुषार्थ से तप-त्याग की एक लहर सी चल पड़ी है।

अब तक '2 मासक्षमण और 13 अठाई सम्पन्न हो चुकी है।'

और पर्युषण पर्व के दौरान 'एक 22 उपवास' के एवम् 'लगभग 40, (छ:, सात, व आठ उपवास) आदि तपस्या के प्रत्याख्यान हुवे।'

पूज्य म. सा. के प्रवचन के विषय 'शक्ति के स्रोत' से प्रभावित होकर '7 जोडों' ने व्याख्यान में 'आजीवन शीलव्रत' के प्रत्याख्यान धारण किये। 'पूर्व में भी 5 जोड़े शीलव्रत को धारण कर चुके हैं।'

प्रवचन में अपार जनमेदिनी जिनवाणी श्रवण करने पहुंच रही है।

'सामायिक, सँवर, प्रतिक्रमण तो अनगिनत संख्या में हो रहे हैं।'

सभी श्रद्धालु धर्म-ध्यान में रत होकर पर्युषण पर्व की विशेष आराधना कर रहे हैं।

दीक्षाओं का ठाठ है, राम गुरु विराट हैं-

सुश्री लवली जी बोथरा सुपुत्री श्री इंद्रचंद जी कुमुद जी बोथरा, सूरत तथा सुश्री अक्षिता जी सांखला सुपुत्री श्री भगवती लाल जी सांखला, हथियाना (कपासन) की दीक्षा 3.10.19 को जोधपुर में आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के मुखारविन्द से होने की संभावना है।

श्री साधुमार्गी जैन संघ, जोधपुर के संरक्षक, वरिष्ठ सुश्रावक श्री गुलाबचन्दजी सा. सांखला (आयु 79 वर्ष) बालेसर प्रवासी ने 11.9.19 दोपहर 4:10 बजे उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. से तिविहार संथारे के पच्चक्खाण ग्रहण किये एवं 12.9.19 को हुक्म संघ के नवम् नक्षत्र परम पूज्य आचार्य भगवन् 1008 श्री रामलालजी म.सा. के श्री मुख से जोधपुर में दोपहर 1 बजे दीक्षा संपन्न हुई।

नव दीक्षित संत गुलाब मुनि जी म.सा. के संथारे का ये समाचार प्रेषित करने तक 16 वां दिवस है।

आप श्री समता भवन में समता भावों केसाथ गुरुदेव के चरणों में निर्लिप्त भावों से अपनी आत्मा की आराधना कर रहे हैं। धन्य होती है वह आत्मा जिसको जीवन के अंतिम समय में गुरु का सान्निध्य व वात्सल्य मिलता है।

हम सभी दर्शन वंदन करके अपने कर्मो की निर्जरा करें व खुद को धन्य करें।

बदली है जोधपुर में फिजा, पिछले कुछ दिनों से,
सब कुछ लग रहा, जुदा जुदा सा।
जबसे की है श्रद्धेय गुलाब मुनि ने,
सिंह गर्जना संल्लेखना की ।।
उमड़ रही भीड़ अथाह,
पाने को एक झलक मुनिवर की
देखने को।।
उस संकल्प की शक्ति,
जो हर जैन साधक का।
होता प्रथम/अंतिम लक्ष्य ...
जिस प्रकार बच्चा पढता सारे साल स्कूल में,
फिर आता उसका परीक्षा देने का समय।
उसी प्रकार जानो संल्लेखना को भी
एक साधक के जीवन में ...
हर जैन साधक
करता जीवन भर साधना
इसीलिए
अंत समय में
होवे उसका
संल्लेखनापूर्ण मरण ...
संल्लेखना यानि
संकल्प पूर्वक
देह का त्याग
मृत्यु को
करना साक्षात्
चेतनता के साथ ...
होवे निराकुल - निर्विकार
सानन्द संपन्न संल्लेखना
इसी मंगल कामना के साथ
गुरुचरणों में
कोटि कोटि वंदन !
जैन धर्म की हो जयकार !!
प्रणाम !
'जय जय कार,जय जय कार,
राम गुरु की जय जय कार'

महा तपस्विनी श्रीमती हेमलता जी बांठिया का नाम गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज।

'नोखा 11-08-2019' नोखा के जैन धर्म का नाम सुशोभित कर गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में स्वर्ण अक्षरों में नाम अंकित करवाने वाली महातपस्विनी बहिन हेमलता प्रदीप कुमार बाँठिया की 151 उपवास की तपस्या के उपलक्ष्य में नोखा के साधुमार्गी जैन श्रावक संघ द्वारा शोभायात्रा (वरघोड़ा) निकाल कर स्वागत किया गया व जनता तक संदेश पहुंचाया कि मार्ग कितना भी कठिन हो आदमी दृढ़ शक्ति से मंजिल तक पहुंचने में कामयाब हो सकता है। इस भीषण गर्मी में केवल उबले हुए पानी के प्रयोग से 151 दिन के उपवास करना सहज काम नही है। व्यक्ति दूसरे किसी भी तरह के कार्य तो सहयोगी अथवा नौकर चाकर से सम्पन्न करवा सकता है लेकिन तपस्या तो मोहनीय कर्मों के क्षय होने से ही अपनी आत्मा के द्वारा ही सम्पन्न हो सकती है। नोखा का जैन समाज प्रफुल्लित है ऐसी भव्य आत्मा को पाकर जिसने अपने परिवार ही नही नोखा के जैन समाज का नाम पूरे विश्व में गौरवान्वित किया है। इस तपस्विनी बहिन से संवाददाता ने बात की तो उन्होंने बताया कि देव, गुरु, धर्म की कृपा से उन्हें तपस्या करने में किसी प्रकार की बाधा या कमजोरी महसूस नहीं हुई है। आज भी ये बहिन अपने नित्यकर्म के कार्य स्वयं ही निपटाती है। ऐसा नही है कि दिन भर बिस्तर में ही पड़े रहो। खाना खाने से जो शक्ति मिलती है उतनी तो नहीं फिर भी स्वास्थ्य की दृष्टि से कमजोरी नही दिखाई दे रही है। धन्य है ऐसे परिवार को जिसमें हर साल तपस्या होती रहती है। उन्हें तपस्या में सहयोग के लिये इनके पति प्रदीप जी बाँठिया व बेटी पायल की भी विशेष भूमिका है जो कहते है कि आप घर की चिंता छोड़ दो, घर के बाकी कार्य हम संभाल लेंगे। इस तपस्या में आगे बढ़ने की प्रेरणा आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. की शिष्या नोखा में विराजित साध्वी शासन दीपिका श्री सुदर्शना जी म.सा. व उनकी सहयोगिनी साध्वियों से मिली है। पूर्व 2016 में इसी बहिन ने 142 दिन की तपस्या पूर्ण की थी।

'महा तपस्विनी श्रीमती हेमलता प्रदीप कुमार जी बांठिया की 151 उपवास की दीर्घ तपस्या का पारणा सम्पन्न।'

विश्व रिकॉर्ड के रूप में दर्ज तपस्या के पारणे से 1 दिन पूर्व तपस्या का पूर मनाया गया। इसके उपलक्ष्य में साधुमार्गी जैन संघ, नोखा द्वारा वरघोड़ा निकाला गया जिसमें पूरा जैन समाज शामिल हुआ। तपस्विनी का जगह जगह पर स्वागत व खोल भरवाई गयी।

'श्री साधुमार्गी जैन संघ, नोखा'

तपस्या करने वालों को धन्यवाद-

युवा गौरव वीर भ्राता पुलकित जी गुलगुलिया सुपुत्र श्री पारस जी चंदा देवी गुलगुलिया ने 21.9.19 को परमागम रहस्य ज्ञाता 1008 आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के मुखारविन्द से 72 उपवास के प्रत्याख्यान ग्रहण किये थे। आपके बड़े भाई श्री गौरव मुनि जी म.सा. तथा छोटे भाई श्री लाघव मुनि जी म.सा. साधुमार्गी संघ में दीक्षित हैं तथा संघ की शान में चार चाँद लगा रहे है।

ऐसे तपस्वी व माता-पिता को नमन।
जिनके हैं ये होनहार रतन।।

- बोथरा कुल की लाडली छोटी तपसन दिशा बोथरा-उम्र 11 वर्ष, पथारकांदी, सुपौत्री स्वं श्री पूनम जी तथा सुपुत्री श्री दिनेश जी बोथरा के नन्हें-नन्हें कदमों ने पूज्य गुरुदेव की कृपादृष्टि से 31 की तपस्या कर जिन शासन की प्रभावना की।

प्रेरणादायक प्रसंग-

11 वर्षीय अन्शु धनेश जी बोहरा अकक्लकुआ ने मोरतलाई में स्वाध्यायी सेवा देकर कीर्तिमान स्थापित किया।

किशनगंज (बिहार) निवासी मुमुक्षु सुश्री नेहा जी लोढ़ा ने गुरु भगवन् द्वारा प्रदत्त सकारात्मक अनन्य कार सेवा के आयाम को आत्मसात् करते हुए, इस ओर तुरंत गति की और 425 लोगों को इससे जोड़कर एक प्रेरणादायक प्रसंग उपस्थित किया।

बोल-मोटा

1. मेरू सूं मोटो- अभयदान
2. स्वंभूरमण सूं मोटो- सत्य वचन
3. मिश्री सूं मीठो- धर्म
4. चन्दा सूं निर्मल- तपस्या
5. पवन सूं तेज- मन
6. तलवार सूं तीखो- कड़वो वचन
7. अग्नि सूं मोटी- मोहिनी
8. धन सूं मोटो- संतोष
9. देवलोक सूं मोटी- मुक्ति

बोल-निष्फल जावे

1. ओस की धरती में बीज बोवे तो निष्फल जावे।
2. अकाले मेह बरसे तो निष्फल जावे।
3. भरे समुद्र में वर्षा हुवे तो निष्फल जावे।
4. गोबर के पुतले को पूजे तो निष्फल जावे।
5. विधवा स्त्री के गर्भ रहे तो निष्फल जावे।
6. कपूत बेटे के लिए धन संचय करे तो निष्फल जावे।
7. अविनीत शिष्य को ज्ञान देवे तो निष्फल जावे।
8. कृपण को दान देवे तो निष्फल जावे।
9. फटे दूध में जावण देवे तो निष्फल जावे।
10. पुरानी प्रीत होवे, कड़वा वचन बोले तो निष्फल जावे।

जोधपुर में स्कूलों में व्यसन मुक्ति कार्यक्रम-

अनन्य महोत्सव 2020-

'अनन्य महोत्सव 2020' के अन्तर्गत 'आचार्य श्री नानेश' के व्यक्तित्व, चिन्तन और अनन्य महोत्सव के विभिन्न आयामों को संघ के प्रत्येक सदस्य तक पहुंचाने के उद्देश्य से 'अनन्य प्रवास यात्रा' का भव्यातिभव्य शुभारम्भ आचार्य श्री नानेश के जन्म जयन्ती के शुभ अवसर पर 'दिनांक 5 जून 2019' को 'छत्तीसगढ़-उड़ीसा अंचल' की धर्म-नगरी 'दुर्ग' से प्रारंभ हुआ और ये अभी तक गतिमान है। सभी अंचलो में संघ की तीनों इकाइयों के विभिन्न राष्ट्रीय, आंचलिक और स्थानीय पदाधिकारियों और संघ के वरिष्ठ श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में होता हैं।

पर्युषण के 'पक्खी पर्व' का व्याख्यान-

प्रातः स्मरणीय प्रतिपल वंदनीय 'श्री 1008 आचार्य प्रवर श्री रामलालजी म.सा.' ने प्रवचन परिसर में उपस्थित हजारों लोगों के बीच 'जैन समाज की दशा और दिशा के बारे में भाव व्यक्त करते हुए फरमाया' कि आज समाज किधर जा रहा है किसी को इस बारे में चिंता नहीं है।

'गर्भपात की एक रिपोर्ट का उल्लेख करते हुए बताया कि सबसे अधिक प्रतिशत में जैनी एबॉर्शन करा रहे हैं,' जिसमें कितने तो अपनी जाति और नाम बदल कर गर्भपात कराते हैं 'यदि उनको सही तरीके से दर्ज किया जाये तो इसकी संख्या में और अत्यधिक बढ़ोतरी होगी।'

समाज मे बढ़ रही बुराइयों का प्रतिकार होना चाहिए। 'साधु को प्रतिकार का अधिकार नहीं है,' श्रावक वर्ग प्रतिकार कर सकता है समाज सुरक्षित रहेगा तो हम सुरक्षित रहेंगे, 'जैनत्व सुरक्षित रहेगा।'

'सम्पूर्ण जैन समाज' को इस विषय पर चिंतन की आवश्यकता है। हम कहां जा रहे हैं, कितना स्तर नीचे जा रहा है। 'आचार्य श्री ने सम्पूर्ण जैन समाज को' फरमाया कि आज के बाद 'गर्भपात कराना बंद करें' सम्पूर्ण, समाज इसे 'आंदोलन का रूप दे,' समाज को आगे आकर इसे 'आंदोलन' का रूप देना होगा 'उपस्थित जैन समुदाय' को प्रत्याख्यान भी कराते हुए फरमाया कि 'पहला कदम यहीं से बढ़े।'

'माता पिता और गुरु तीर्थ के समान हैं ये आगम में सम्बद्ध है,'

आगमों में इसका उल्लेख है।

आस्त्रवों का त्याग करें, हमारी जीवन चर्या सात्विक चर्या हो। 'मुनि के वचन कभी खाली नहीं जाते।'

उलझी हुई गुत्थी को सुलझाना सीखें। हर समस्या का समाधान है। राग द्वेष से शोक और वेदना बढ़ती है। 'ज्ञान की आंख खुलने से कर्मो का उपादान होता है।' दुनिया की डिग्री ले सकते हो पर 'मैं कौन' इसकी पहचान डिग्री से नहीं होने वाली 'आदर्श श्रावक की पहचान' उपजाऊ भूमि के समान होना चाहिये। हमारी 'भूमिका अरिहंत बनने की हो' न कि 'अहं की पोषण' की होनी चाहिए।

अपने कर्तव्यों का पूर्ण निर्वहन करें। समता भाव न आना , समाधि भाव नहीं आना कहीं कहीं अपनी कमजोरी है। धर्माराधना असली होना चाहिए दिखावे के लिए नहीं।

'प्रभावना से भीड़ इकट्ठी करने की जरूरत नहीं'

'जीवन मे उपकार किसी का भूलना नहीं' और 'अहसान किसी पर जताना नहीं'

इसके पूर्व----

'उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनिजी म.सा.' ने देवकी माता का वर्णन करते हुए फरमाये कि-

तीर्थंकर देवों की, वीतराग देव का कहीं चित्र और मूर्ति का उल्लेख आगमो में नही है जो दिखाया बताया जाता हैं काल्पनिक मात्र है। 'वीतराग तो वीतरागी हैं सदा सुख के झूले में झूला झूल रहे हैं।'

मानसिक भावना की झलक शारिरिक परिवर्तन पर दिखाई देती है। समस्या का समाधान निश्चित है, सही माध्यम से समाधान का मार्ग है। सकारात्मक दृष्टिकोण होनी चाहिए।

'शुद्ध पौषध की आराधना अनेक कार्यो को सिद्ध करती है।'

'तेला का उपवास कर 72 घंटे देव का ध्यान करने से आज भी देव को प्रकट किया जा सकता है' इस बात का ध्यान रखें 'ध्यान भंग नहीं होनी चाहिए'

'जो लोग कार्य पर आंखें रखते हैं वो अपना और सबका विकास करते हैं' और जो महत्व पर आंखें रखते हैं उनमें न स्वयं का और ना किसी का विकास है। 'हमेशा गुण ग्राही बने।'

आत्म जागृति का पर्व सम्पन्न

'सोनारपाल- जैनियों का सबसे बडा महापर्व पर्युषण तप त्याग एवं धर्माराधना के साथ सम्पन हुआ। इस वर्ष सोनारपाल में पर्युषण पर्व समता प्रसार संघ के स्वाध्यायी श्री प्रेमचंद जी भंडारी, रायपुर एवं अहिंसा प्रचारक श्री महेश जी नाहटा के सान्निध्य में धर्म उल्लास मय वातावरण में सम्पन्न हुआ।आठ दिनों तक ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप दान,क्षमा विषयों पर प्रेरक उद्बोधन हुये। अंतगडदशा सूत्र, कल्पसूत्र का वाचन विवेचन के माध्यम से महापुरुषों के बताये राह पर चलने का संकल्प लोगों ने लिया। समीक्षण ध्यान की प्रयोग विधि भी कराई गई। ज्ञान वर्धक कार्यक्रम कौन बनेगा धर्म वीर, मेरी आवाज सुनो, प्रश्न मंच एवं विभिन्न लिखित तथा मौखिक धार्मिक परिक्षाओं के माध्यम से लोगों ने अपनी प्रतिभा व धर्म रुचि को आगे बढाया।'

'स्कूलों में व्यसन मुक्ति , शाकाहार एवं संस्कार क्रांति के कार्यक्रम हुये। श्रीमती विविका प्रवीण सांखला जी ने 11(ग्यारह) उपवास, लक्ष्मी लोढा ने 9 उपवास एवं श्रीमती गरिमा दिलीप जी पारख ने 9 उपवास के प्रत्याख्यान किये। इसके अलावा कई भाई बहनों ने एकासना, उपवास, बेला, तेला, सामायिक, संवर पौषध आदि तप आराधना किये। संवत्सरी क्षमा पर्व के अवसर पर सभी प्रवीण सांखला, नवरतन पारख, शांतिलाल संचेती, साहिल पारख ने अपने भाव रखे एवं श्रीमती प्रार्थना सांखला, खुशबू सांखला, सुशीला सांखला, अर्चना बाफना के साथ महिला मंडल ने गीतों के माध्यम से अपने भाव रखे। संवत्सरी प्रतिक्रमण के पश्चात् सभी धर्मनिष्ठ श्रावक श्राविकाओं ने एक दूसरे से एवं समस्त जीवों से क्षमायाचना की। इस महापर्व के शुभ अवसर पर अन्य ग्राम वासियों ने भी अपनी भागीदारी दी एवं शाकाहार अपनाया तथा व्यसन मुक्त रहने का संकल्प लिया। श्री मोतीलाल सांखला, हरीश बाफना, दिलीप बुरड, गुलाब पारख, संतोष पारख, एवं महिलाएं उपस्थित रहीं।।'

प्रेषक- प्रवीण सांखला

जोधपुर में आयोजित महिला समिति की सातवीं कार्यकारिणी बैठक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति की सातवीं कार्यकारिणी बैठक दिनांक 17 जुलाई 2019 को जोधपुर में संपन्न हुई! बैठक की शुरुआत तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य श्री रामलाल जी म.सा., बहुश्रुत आराधक उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनि जी म.सा., सभी चारित्र आत्माओं के चरणों में वंदन करते हुए एवं नवकार मंत्र और संघ समर्पण गीत के साथ की गयी! तत्पश्चात रा. अध्यक्षा प्रभा जी देशलहरा के सान्निध्य में संकल्प सूत्र का वाचन किया गया! सुरेखा जी सांड द्वारा बताया गया कि जोधपुर में सभी साधुमार्गी परिवार चातुर्मास में धर्मआराधना से जुड़ गए है।

रा. महामंत्री द्वारा ब्यावर में आयोजित छठीं कार्यकारिणी बैठक की पुष्टि की गयी! इसके बाद धर्म सहायिका श्रीमती कंचन जी कांकरिया द्वारा श्रीमद् भगवती सूत्र प्रश्नमाला से जुडने के लिये कहा गया। उनके द्वारा बताया गया कि यदि हम श्रीमद् भगवती सूत्र प्रश्नमाला से जुड़ जाते है तो हम स्वयं ही भगवान महावीर से जुड़ जायेगे। जैन संस्कार पाठ्यक्रम की संयोजिका नीतू जी लोढ़ा द्वारा अनन्य महोत्सव के अन्तर्गत होने वाली सामायिक स्पेशल एवं प्रतिक्रमण स्पेशल में सभी को जोड़ने के लिये प्रेरित किया गया और ज्यादा से ज्यादा जैन संस्कार पाठ्यक्रम परीक्षा में भाग लेने के लिये कहा गया।

श्रीमती पुष्पा जी मेहता द्वारा केसरिया कार्यशाला के निष्पादित कार्यो की विवेचना की गई और अगले तीन महीनों के कार्यो के बारे में बताया गया। सभी कार्यो की नियमावली भी बतायी गई। इसी के साथ रा. महामंत्री द्वारा कहा गया कि गुरु भगवन् का आह्वान है कि वर्तमान में जो भी पदाधिकारीगण नियुक्त हो वे सभी उत्क्रांति परिवार होने आवश्यक है।

रा. महामंत्री जी द्वारा सभा में उपस्थित सभी अंचल के उपाध्यक्ष-मंत्री को त्रैमासिक रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिये आमंत्रित किया गया। तमिलनाडु अंचल की रा. उपाध्यक्ष निर्मला जी बैद द्वारा अनन्य प्रवास के बारे में बताया गया और तमिलनाडु क्षेत्र में हुई गतिविधियों के बारे में अवगत कराया गया। छ.ग. अंचल की रा. उपाध्यक्ष प्रतिमा जी बोथरा द्वारा छ.ग. क्षेत्र में हुए अनन्य प्रवास के बारे में जानकारी दी गई। जिसमें 96 गांवों का प्रवास किया गया। प्रवास के दौरान गुरू भगवन् द्वारा दिये गये आयामों के बारे में सभी को अवगत करवाया गया और सकारात्मक कार सेवा, परिवारांजलि, नानेशवाणी, 50 थोकड़े आदि के फॉर्म भरवाये गये। छ.ग. क्षेत्र में केसरिया कार्यशाला के सभी कार्य निष्पादित हो रहे है। मालवा अंचल की कार्यकारिणी सदस्य चंदनबाला जी सियाल द्वारा मालवा क्षेत्र में हुई परीक्षा और धर्म प्रभावना के बारे में बताया गया। जयपुर-ब्यावर अंचल की रा. मंत्री स्नेहा जी बम्ब द्वारा रा. पदाधिकारियों के साथ हुए प्रवास के बारे में बताया गया तथा सभी प्रकल्पों में कार्यकारिणी सदस्याओं द्वारा जयपुर-ब्यावर क्षेत्र में सराहनीय कार्य किये गये है। अनन्य महोत्सव के आयाम अब कर कमाल के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। बीकानेर-मारवाड अंचल की रा. उपाध्यक्ष द्वारा बीकानेर क्षेत्र की रिपोर्ट प्रस्तुत की गई और साथ ही बीकानेर क्षेत्र में आयोजित मोक्ष आराधना शिविर की विशेषताएं बताई गई।

मेवाड़ अंचल की रा. उपाध्यक्ष मंजू जी रांका द्वारा बताया गया कि मेवाड़ अंचल में अनन्य महोत्सव की सभी प्रवृतियों में पूर्ण समर्पणा के साथ कार्य किये जा रहे है। केसरिया कार्यशाला के सभी कार्य मेवाड़ अंचल में बहुत ही उत्साह के साथ निष्पादित किये जा रहे है। मेवाड़ क्षेत्र में जहां-जहां गुरूदेव विराजे उन ग्रामों को उत्क्रांति ग्राम घोषित किये गये। पूर्वोत्तर अंचल की रा. मंत्री अरूणा जी सामसुखा द्वारा पूर्वोत्तर क्षेत्र में किये प्रवास और महिला गठन की जानकारी दी गई। उत्क्रांति ग्राम बनाये गये और पूर्वोतर क्षेत्र में केसरिया कार्यशाला के सभी कार्य महिला मंडलों द्वारा बडे ही हर्षोल्लास के साथ किये जा रहे है। बंगाल-बिहार-नेपाल-भूटान की रा. उपाध्यक्ष मंजू जी डागा द्वारा बंगाल क्षेत्र में हुये सभी गतिविधियों के बारे में बताया गया साथ ही समता संस्कार पाठशाला की रा. संयोजिका कुमुद जी सिपानी और सुश्री दीपिका जी चंडालिया द्वारा हावड़ा में शिविर लगाया गया और ट्रेनिंग दी गई। रा. कार्यकारिणी सदस्य जयश्री जी बच्छावत द्वारा गुजरात क्षेत्र में हुई धर्मप्रभावना और गतिविधियों के बारे में बताया गया। सूरत में सभी महिलाएं अनन्य महोत्सव को सार्थक बनाने के लिये उत्साह के साथ काम कर रही है। नीलम जी रांका द्वारा मुम्बई क्षेत्र में हुई गतिविधियों के बारे में बताया गया। रा. कार्यकारिणी सदस्य प्रभा जी संचेती द्वारा महाराष्ट्र क्षेत्र में हुई धर्मप्रभावना के बारे में बताया गया साथ ही अमरावती क्षेत्र को परिवारांजलि ग्राम घोषित करवाने का लक्ष्य रखा गया। कर्नाटक-आंध्रप्रदेश की रा. उपाध्यक्ष रेखा जी दक द्वारा सभी को अवगत करवाया गया कि बैंगलोर में 139 लोगो ने 50 थोकड़े की परीक्षा में भाग लिया और कर्नाटक क्षेत्र से 116 बच्चे अब कर कमाल के प्रतिभागी बने।

सुरेखा जी सांड द्वारा Brochure Exivition बारे में बताया गया और सभी उपाध्यक्ष-मंत्री से निवेदन किया गया कि वे सभी महिला समिति के कार्यो को स्थानीय महिला मंडल तक पहुंचाये जिससे सभी महिलायें समिति की प्रवृतियों से अवगत हो सके। परिवारांजलि की रा. संयोजिका चंदनबाला जी लुणिया द्वारा बताया गया कि अनन्य महोत्सव के अनन्य कार सेवा का शुभारंभ दुर्ग से हुआ और परिवारांजलि के आयाम को लक्ष्य तक पहुंचाने का यह श्रेष्ठ मार्ग है। इसके बाद सर्वधर्मी संयोजिका चन्द्रकांता जी बोथरा द्वारा सर्वधर्मी योजना के बारे में बताया गया और समता छात्रवृत्ति की संयोजिका नीलम जी रांका द्वारा समता छात्रवृत्ति की पूरी जानकारी दी गई।

रा. कोषाध्यक्ष सुमन जी सुराना द्वारा 50 थोकड़े की विस्तृत जानकारी दी गई। और सभी को 50 थोकड़े से जुड़कर गुरुदेव के आयामों को पूरा करने के लिये प्रेरित किया गया। निवर्तमान रा. अध्यक्षा कुमुद जी सिपानी द्वारा कहा गया कि सकारात्मक कार सेवा को तन-मन-धन से साकार करना है चाहे हम पद पर रहे या न रहे सभी को एक जुट होकर काम करना है साथ ही यह अवगत करवाया कि अब कर कमाल में 5000 बच्चों ने धोवन पानी पीना सीखा है। प्रबोधिनी संयाजिका वीना जी नाहर द्वारा सभी से निवेदन किया गया कि प्रबोधिनी में 3 माह के कार्यो की संक्षिप्त रिपोर्ट बनाकर देवे जिससे पूरे अंचल की एक साथ सूचना आ जायेगी इसी के साथ प्रबोधिनी में दी गई वर्ग पहेली के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

अंत में रा. महामंत्री द्वारा रा. अध्यक्षा को उद्बोधन प्रस्तुत करने के लिये आमंत्रित किया गया। रा. अध्यक्षा द्वारा उद्बोधन प्रस्तुत करने के साथ सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया गया और कहा गया कि यह पूरी सफलता मेरी नही है। अप्रत्यक्ष रूप से, प्रत्यक्ष रूप से सभी के द्वारा सफलता प्राप्त हुई है। किसी ने हौसला दिया किसी ने मार्गदर्शन किया और किसी ने समय का त्याग किया तब जाकर हम कामयाब हुए है अनन्य महोत्सव में दिये जा रहे सहयोग के लिये सभी का धन्यवाद किया गया। बैठक में संघ के गौरवशाली अध्यक्ष श्रीमान् जयचंद लालजी सा डागा द्वारा महिला समिति की नव अध्यक्षा की घोषणा की गई। श्रीमती नंदा जी कर्नावट का नाम अध्यक्षा पद के लिये मनोनीत किया गया। इसी के साथ रा. महामंत्री द्वारा सभा में उपस्थित सभी महिलाओं का धन्यवाद किया गया।

ब्यावर की रिपोर्ट–

''कर्म खपाने आया पाप मिटाने आया
आत्मा को परमात्मा से मिलाने पर्व पर्युषण आया''

सर्वप्रथम पंचपरमेष्ठी को वंदन करती हुयी पांच पदो में विराजित सभी चारित्र आत्माओं को वंदन करती हुयी संवत्सरी के पावन अवसर सभी से क्षमा याचना करती हूं। हमारी महिला समिति की संरक्षिका एवं प्रबोधिनी की संपादिका श्रीमती वीना जी नाहर एवं सभी महिला मंडल की सदस्याओं से क्षमा याचना करती हूँ। गुरूदेव की असीम कृपा से ब्यावर संघ में तप त्याग का ठाठ लगा हुआ है। यहाँ पर 15 संत व सतियाँ जी विराजमान है। सुरक्षा श्री जी म.सा. के सान्निध्य में प्रतिदिन गमक व पच्चीस बोल की कक्षाएं चल रही है। 21 जुलाई को भी पराग श्री जी म.सा. के सान्निध्य में तीन दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। लगभग 75 बहिनों ने भाग लिया, मंडल से सभी को सम्मानित किया। 5 अगस्त से 5 दिवसीय शिविर श्री सुरक्षा श्री जी म.सा. के सान्निध्य में लगा जिनका विषय ''आआ'' ''चले गुरु चरणार'' 135 बहिनों ने भाग लिया। सभी को वीर माता प्रेम बाई जी ललवानी की तरफ से पुरस्कृत किया गया। 25 जुलाई एवं 25 अगस्त को केसरिया कार्यशाला का कार्यक्रम उत्साह पूर्वक नियमावली के साथ सम्पन्न हुआ। 20 अगस्त को ब्यावर निवासी सोनू जी रांका की दीक्षा जोधपुर में सम्पन्न हुयी दीक्षा के प्रसंग पर पांच दिन का ब्यावर में आयोजन रखा, मंडल की तरफ से चोबीसी में सकल जैन समाज की महिलाओं को आमंत्रित किया। श्रीमती वीना जी नाहर के नेतृत्व में सोनू जी के जीवन पर एक सुन्दर नाटक का मंचन किया गया। मंडल की बहिनों द्वारा सुन्दर प्रस्तुति दी गई।

नाटक में भाग लेने वाली सभी बहिनो को वीना जी नाहर एवं संघ अध्यक्ष श्री गजराज जी गुलेछा द्वारा पुरस्कृत किया गया। संघ द्वारा भव्य बर घोडा फिर दीक्षार्थी परिवार की तरफ सकल साधुमार्गी परिवार का स्नेह भोज रखा गया। पयुर्षण में 24 घंटे का जाप रखा गया। ब्रोशर प्रतियोगिता में श्रीमती अनु जी गुलेच्छा का अखिल भारतीय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त कर ब्यावर महिला मंडल का नाम रोशन किया एवं जयपुर-ब्यावर अंचल में प्रथम-सोनू जी चौधरी एवं द्वितीय-अंजु जी हिंगड रहे-साधुवाद के पात्र है। तपस्या के कुंभ में चातुर्मास प्रवेश पर 53 तेले, 50 संवर संपन्न हुए। श्रीमती रेखा जी डेढ़िया के 31 श्रीमती मंजु जी मेहता के 15, श्रीमती गणपत बाई जी कोठारी उम्र 95 के 15, 4 ने 11, 4 के नौ की तपस्या, 20 के 8, 1 के 6, 3 के 5 की तपस्या हुई। पर्युषण में तेले 95, पर्युषण एवं संवत्सरी के दिन 400 पौषध संवर हर पक्खी पर 20 पौषध, उपवास आदि, अनु जी गुलेच्छा ने एकासन का मासखमण किया, जन्माष्टमी पर 20 उपवास, 20 एकासन एवं 20 संवर हुए। ब्यावर में विराजित सभी चारित्र आत्माओं का दर्शन लाभ लेवे। पर्युषण पर्व पर प्रवचन के पश्चात्, समता युवा संघ द्वारा एवं दोपहर में सुरक्षा श्री म.सा. के सान्निध्य में प्रतियोगिता कराई गई।

प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी साधुमार्गी जैन संघ, ब्यावर की वार्षिक गोठ रखी गई, जिसमें तपस्वियों का, स्वाध्यायियों का तथा होली चातुर्मास के सभी संयोजकों का शॉल, माला, मोमेंटो द्वारा शानदार स्वागत किया गया।

अध्यक्षा–शशिकला डांगी
मंत्री– प्रमिला बोहरा

बड़ीसादड़ी की रिपोर्ट–

तेले तप के लाभार्थी श्रीमान् सुन्दरलाल जी सा. मारू रहे। समता युवा संघ के मंत्री श्री नरेन्द्र जी रांका, हेमन्त जी डांगी, विशाल जी मारू आदि के अधिक प्रयास से रात्रि कालीन संवर व जाप का आयोजन किया, दिन का जाप महिला मंडल द्वारा किया गया।

प्रसिद्धि श्री जी म.सा. की प्रेरणा व युवा कारोबारी श्री धनपाल जी पुत्र प्रकाश जी मेहता ने प्रेरणा कर प्रवचन मे सभी ने सामायिक आराधना की प्रवचन हॉल में श्वेत धवल चोलपट्टो में सामायिक कर रहे सभी युवाओ ने मनोरम दृश्य उपस्थित किया। सायं कालीन प्रतिक्रमण 200 से 250 लगभग प्रतिक्रमण पहले ही दिन हुए श्री विशाल जी मारू ने ''माँ की महिमा का स्तवन'' प्रस्तुत कर जनता को मंत्रमुग्ध कर दिया।

नरेन्द्र जी रांका, विशाल जैन– बड़ीसादड़ी

इंदौर की रिपोर्ट–

महिला मंडल की मीटिंग 19.10.19 को दोपहर 2 बजे से 4 बजे तक हुई। मीटिंग में प्रतिक्रमण से संबंधित चर्चा की गई। बहनों को प्रतिक्रमण याद करने के लिये प्रेरित किया गया और सुनने और सुनाने के लिये जो भी समय आप चाहे उस पर व्यवस्था करने के लिये विचार-विमर्श किया गया। प्रतिक्रमण हमारे जीवन भर की पूंजी है, यह याद है, तो हमे बहुत कुछ याद है। प्रतिक्रमण (आवश्यक सूत्र) हमारा बत्तीसवां आगम है। यदि हमे प्रतिक्रमण याद है तो हमें संतुष्टि मिलती है कि हमने एक आयाम याद कर लिया। कई बहनों ने प्रतिक्रमण याद करने का अपना निश्चय बताया।

इंदौर महिला मंडल द्वारा धार्मिक बहन सीमा चौहान को कैन्सर के इलाज हेतु 32500/– का अनुदान दिया।

कुसुम लता जैन, अध्यक्ष
कांता नाहटा, मंत्री

बैंगलुरू महिला मंडल की रिपोर्ट–

समता महिला मंडल बैंगलुरु द्वारा आयोजित मीटिंग मे सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र का जाप करके, रामेश चालीसा का पाठ एवं संघ समर्पणा का पाठ करने के पश्चात् लगभग 20 से 25 मिनट तक मीटिंग में आगे की रूपरेखा तैयार करके, श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति की नवनिर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्षा 'श्रीमती नंदाजी कर्णावट' का स्वागत किया गया उसके पश्चात केसरिया कार्यशाला के 'पांचवें महीने का अष्ट प्रवचन माता' सकुशल संपन्न किया गया प्रतियोगिता मे लगभग '50' महिलाओं की उपस्थिति थी उसमें से लगभग '21' महिलाओं ने भाग लिया जिसमें तीन तीन महिलाओं के सात समूह बनाया गए 'मन, वचन, काया, इर्या, समिति, गुप्ति भाषा' के नाम से समूह बनाया गया जिसमें

'प्रथम स्थान मन समूह'
'द्वितीय स्थान इर्या समूह'
'तृतीय स्थान भाषा समूह'

समता महिला मंडल, बैंगलूरू

प्रतियोगिता-

राज-प्रश्न

1. किस राजा के पुत्र ने 'जा रे जा' शब्द कहने से दीक्षा ली?............................
2. किन-किन राजाओं के लग्न, दीक्षा, संथारा, केवल ज्ञान व मोक्ष साथ में हुआ?...........
3. कौन से राजा एक गाँव के लिये अपने पुत्र से लड़ाई करने को तैयार हुए? ....
4. कौन से राजा की दासी गुटीका खाने से सुवर्ण जैसी हो गई?......................
5. कौन-से राजा को अपनी संतति के भी शादी करवाने के पच्चक्खान थे?..............
6. किन-किन राजाओं के नाम हमें एकेन्द्रिय का बोध कराते हैं?........................
7. केशी कुमार ने कौन-से राजा को परदेशी से स्वदेशी बनाया?........................
8. संघ रक्षा हेतु कौन-से राजा ने दान दिया?............................
9. इंद्र स्तंभ की दुर्दशा देखकर दीक्षा लेने वाले राजा?............................
10. आम्र वृक्ष देखकर अनगार बनने वाले राजा?............................
11. 39 दिन की धर्माराधना करने वाले राजा?............................
12. अशुचि में कीड़े के रूप में पैदा होऊँ तो तुम मुझे मारना नहीं- किसने किससे कहा?...........
13. पानी से पुद्गल स्वरूप किसने किसको समझाया?............................
14. कौन से राजा ने संवत्सरी की वास्तविक आराधना की?............................
15. एक मास की उम्र में कौन से राजा का राज्याभिषेक हुआ?...........................

नियम-ऊपर दिये गये प्रश्नों के उत्तर आपको इनके सामने ही लिखकर भेजने हैं। आप उत्तर भरकर निम्न पते पर पोस्ट से भेज सकते हैं। भेजने की अंतिम तिथि 30 अक्टूबर 2019 है। निर्णायक का निर्णय अंतिम होगा। आपका नाम, पता व मोबाईल नम्बर स्पष्ट होना चाहिये। कृपया ध्यान रखें कि प्रश्नोत्तरी जेरॉक्स करके नहीं भेजें वो मान्य नहीं होगी। आप मूल प्रति में ही भेजें।

पुरस्कार-

प्रथम पुरस्कार 1100/- द्वितीय पुरस्कार 700/-
तृतीय पुरस्कार 500/- सांत्वना पुरस्कार 200/- (दो)

(समान अंक पाने वालो की वरीयता चिट से निकाली जायेगी)

पुरस्कार सौजन्यकर्त्ता : - कुमुद सिपानी, बैंगलुरु

उत्तर भेजने का पता एवं सम्पर्क सूत्र :-

वीना नाहर

पता- ए/12, रिको हाऊसिंग कॉलोनी, अजमेर रोड, ब्यावर- 305901 (राजस्थान)

मोबाईल नम्बर- 9950304308

वर्ग पहेली प्रतियोगिता के परिणामः-

इस बार वर्ग पहेली प्रतियोगिता में पूर्णरूपेण सही आने वाले भाग्यशाली प्रतिभागी सिर्फ एक ही थे।

1.	प्रथम पुरस्कार	1100/-	नीरज कुमार जी जैन, जयपुर
2.	द्वितीय पुरस्कार	700/-	प्रमिला जी बोहरा, ब्यावर
3.	तृतीय पुरस्कार	500/-	नीलम जी जैन, इंदौर

सांत्वना पुरस्कार

200/- जया जी बाफना, सरवानिया महाराज (जावद) 200/- शशिकला जी डांगी, ब्यावर

सही उत्तर-

ऊपर से नीचे

1. अधर्म, अज्ञान, अव्रत
2. अवग्रह
6. अतिचार
7. प्रतिक्रमण
8. पंडित
10. पाणं
12. चारित्रिक
13. पाप
14. पद
15. कन्द
16. चार
18. पाटला
19. संयम
21. वारि
22. कर्म
25. मृषावाद
26. अदतादान

उत्तर

1. अनर्थदंड
2. अतिक्रम
3. ग्रहण
4. गति
5. मरण
7. प्रस्थान
8. पंचाचार
9. द्विपद
10. पाककला
11. अपकाय
14. परपरिवाद

बायें से दायें

17. अनशन
18. पाक्षिक
19. संथारा
20. धर्मध्यान
23. मृषा
24. पत्ता

स्थानीय महिला मण्डलों से अनुरोध

जैसा कि यह सर्वविदित है कि प्रबोधिनी महिला समिति का अपना मंच है। अध्यात्म, धर्म और सेवा के क्षेत्र में महिलाओं का पुरूषार्थ कदापि कमतर नही है। प्रबोधिनी के प्रकाशन का उद्देश्य है कि यह पुरूषार्थ पूरी दुनिया के सामने आए और संपूर्ण संघ-समाज के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बने। इसके लिए सभी स्थानीय महिला समितियों से अनुरोध है कि इस मंच को सजाने के लिए अपने धर्म-ध्यान और सेवा संबंधी गतिविधियों का विवरण प्रबोधिनी की मेल आई डी पर भेंजे। प्रबोधिनी का आगामी अंक अगली कार्यकारिणी बैठक के समय प्रकाशित होगा, अतः आपके क्षेत्र की गतिविधियों एवं स्वयं के कार्यो का विवरण भेज दें। कृपया निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें- 1. प्रकाशन सामग्री का विवरण अतिसंक्षिप्त अर्थात टू द पाइंट लिख कर भेजें। 2. आगम-भक्ति, परिवारांजलि, विहार-सेवा व अन्य प्रवृत्तियों-आयामों से संबंधित जो भी फॉर्म स्थानीय समितियों द्वारा भरवायें जाएँगें, उनकी संख्या की जानकारी भी प्रबोधिनी में प्रकाशन हेतु भेंजे।

पताः

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

प्रधान कार्यालयः

'समता भवन', आचार्य श्री नानेश मार्ग,

नोखा रोड़, गंगाशहर,

बीकानेर- 334001 (राज.)

मो.- 7231033008

प्रबोधिनी पर ई-मेल भेजने हेतु :-

prabodhinims@gmail.com

सम्पादक वीना नाहर

ईमेल आईडी :-

veenanahar@hotmail.com

Premium Quality

JAIN SAMTA
समता महिला सेवा केन्द्र

जितना चाहे खाते जाएं

JAIN SAMTA
समता महिला सेवा केन्द्र
(अन्तर्गत : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ)

हमारे अन्य उत्पाद

जैन समता पापड़

पापड़
चने के मीठे व नमकीन
मूंग कम व तेज
हाथ के बने

खाखरा
विभिन्न स्वाद में
उपलब्ध

पापड़ व मसालों की अग्रिम बुकिंग (Advance Booking) हेतु सम्पर्क करें

शुद्ध आहार शाकाहार

समता महिला सेवा केन्द्र, धनजीभाई का नोहरा, चांदनी चौक, रतलाम
फोन 07412-238696, मो.9407326400, 6262226400
समय - प्रात: 9 से रात्रि 8 बजे तक

शहर/ग्राम पापड़ विक्रय के लिए विक्रेता (Dealer) खुदरा विक्रेता (Retailer) नियुक्त करना है।
गृहिणियों/अन्य महिलाओं के लिए यह ऑफर (आकर्षक कमीशन) लागू है। वितरक कृपया सम्पर्क करें।